इकाई 10 नायक, नायिका और अन्य पात्र

इकाई की रूपरेखा

10.0 उद्देश्य

10.1 प्रस्तावना

10.2 नायक परिभाषा तथा भेद, नायिका परिभाषा तथा भेद, सूत्रधार, पारिपार्श्विक, विदूषक, कंचुकी, प्रतिनायक।

10.3 सारांश

10.4 शब्दावली

10.5 सन्दर्भ ग्रन्थ

10.6 बोध प्रश्न

10.0 उद्देश्य

नायक आदि पात्रों की परिभाषा तथा भेद से सम्बन्धित इस इकाई का अध्ययन कर लेने के बाद आप :

- नायक के स्वरूप को जान सकेंगे।
- नायक के भेदों से परिचित हो सकेंगे।
- नायिका की विशेषताओं का वर्णन करने में समर्थ हो सकेंगे।
- नायिका के भेदों का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- सूत्रधार के बारे में जानकारी हो सकेगी।
- पारिपार्श्विक की भूमिका को पहचान सकेंगे।
- विदूषक पात्र से परिचित हो सकेंगे।
- कंचुकी का लक्षण समझ सकेंगे।
- प्रतिनायक की भूमिका को जान सकेंगे।

10.1 प्रस्तावना

नाट्य के मंच पर प्रदर्शन के लिए पात्रों की अनिवार्य रूप से आवश्यकता होती है। नाट्य के तीन महत्त्वपूर्ण तत्त्व वस्तु, नेता और रस हैं। इनमें से नेता से आशय पात्रों से है। नाट्य में कई पात्र भूमिकाओं का निर्वाह करते हैं। इनमें से नायक और नायिका प्रमुख होते हैं, शेष पात्र गौण रूप में रहते हैं। नायक और नायिकाओं के भी कई प्रकार होते हैं। इनके अतिरिक्त रंगमंच के आरम्भ और संचालन में भूमिका का निर्वाह करने वाला महत्त्वपूर्ण पात्र सूत्रधार होता है। इन पात्रों की भूमिकाएँ छोटी या बड़ी हो सकती हैं किन्तु वे आवश्यक व महत्त्वपूर्ण होती हैं। ऐसे पात्रों में विदूषक, कंचुकी आदि आते हैं। प्रतिनायक की भी भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रहती है। इन पात्रों के लिए नाट्यशास्त्र में विधान किये गये हैं। इन विधानों के अनुरूप ये पात्र

अपनी भूमिका का निर्वाह करते हैं। नाट्य के प्रकारों की आवश्यकता के अनुसार नायक के भेदों की आवश्यकता होती है। नायक के चार भेदों का निरूपण नाट्यशास्त्र में किया गया है। ये चार भेद हैं– धीरोदात्त, धीरप्रशान्त, धीरललित और धीरोद्धत। इसी प्रकार नायिका के भी भेदों का निरूपण किया गया है। नायिकाओं के सामान्य गुण नायक के समान ही होते हैं। नायिकाएँ तीन प्रकार की होती हैं।

उपर्युक्त नायक आदि पात्रों की परिभाषाओं और प्रकारों को आपके अध्ययन के लिए इस इकाई में प्रस्तुत किया जा रहा है।

10.2 नायक परिभाषा तथा भेद, नायिका परिभाषा तथा भेद, सूत्रधार, पारिपार्श्विक, विदूषक, कंचुकी, प्रतिनायक

नाट्य में पात्रों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है, यह स्पष्ट ही है। इसी कारण भरत इनके विषय में विस्तार से निरूपण करते हैं। पात्रों के द्वारा ही सम्पूर्ण कथानक दर्शकों तक पहुँचता है। इसलिए पात्रों के चित्रण में विशेष सावधानी बरतना अपेक्षित होता है। पात्रों में मुख्य रूप से पुरुष तथा स्त्री पात्र होते हैं। इन पात्रों को भी प्रकृति के आधार पर तीन प्रकारों में रखा गया है– उत्तम, मध्यम और अधम। जैसा कि भरत कहते हैं–

''समासतस्तु प्रकृतिस्त्रिविधा परिकीर्तिता।
स्त्रीणां च पुरुषाणां च उत्तमा मध्यमाधमाः।।'' नाट्यषास्त्र 24.2

इनमें से प्रत्येक के विषय में वे विस्तार से बतलाते हैं। उत्तम प्रकृति के वे माने जाते हैं जो जितेन्द्रिय, ज्ञानवान्, कई कलाओं के ज्ञाता, दक्ष, दीनों के सान्त्वनाकर्ता, कई शास्त्रों के ज्ञाता, गम्भीर, उदार, धीर और त्यागी हों। जैसा कि भरत कहते हैं–

''जितेन्द्रिया ज्ञानवती नानाशिल्पविचक्षणा।
दक्षिणा भोगदक्षाऽथ दीनानां परिसान्त्विनी।।
नानाशास्त्रार्थसम्पन्ना गम्भीर्यौदार्यशालिनी।
धैर्यत्यागगुणोपेता ज्ञेया प्रकृतिरुत्तमा।।'' नाट्यशास्त्र 24.3,4

वहीं मध्यम प्रकृति के पात्र वे कहे जाएंगे जो लोक व्यवहार में दक्ष हों, कलाओं और शिल्पों को जानने वाले हों, ज्ञानसम्पन्न और मधुर स्वभाव वाले हों। जैसा कि भरत कहते हैं–

''लोकोपचारचतुरा शिल्पशास्त्रविशारदा।
विज्ञानमाधुर्ययुता मध्यमा प्रकृतिः स्मृता।।'' नाट्यशास्त्र 24.5

अधम प्रकृति के पात्र वे होते हैं जो वार्तालाप में कठोर, दुष्ट स्वभाव वाले, क्रोधी, मित्रों का अहित करने वाले, उपकारों को न मानने वाले, स्त्रियों में आसक्ति रखने वाले, कलह करने वाले, पापकर्मों को करने वाले, दूसरों के धन को हरने वाले होते हैं।

जिस प्रकार पुरुषों के उपर्युक्त तीन प्रकार निरूपित किये गये हैं उसी प्रकार स्त्रियों के भी तीन प्रकार बताये गये हैं।

इन नायक नायिकाओं के अतिरिक्त अन्य पात्र भी कथावस्तु की प्रस्तुति में आवश्यक भूमिकाओं का निर्वहन करते हैं, जैसे– सूत्रधार, पारिपार्श्विक, कंचुकी, विदूषक, खलनायक आदि।

अब आपके अध्ययन के लिए नायक आदि पात्रों और इनके प्रकारों के साथ ही अन्य महत्त्वपूर्ण पात्रों को प्रस्तुत किया जा रहा है। सर्वप्रथम नायक का अध्ययन कीजिए।

10.2.1 नायक परिभाषा तथा भेद

भारतीय मनीषा की प्रवृत्ति आरम्भ से ही असत् से सत् की ओर रही है। वेद के 'असतो मा सद्गमय' उपदेश के अनुसार सत् के प्रति आग्रह निम्नलिखित शब्दों में देखा जा सकता है– सज्जन, सद्गुण, सदाचार आदि। सद्गुणों की महिमा से युक्त व्यक्तित्व लोक में प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। साहित्य में व्यक्तित्व के आदर्श या मानदण्ड नायक के रूप में व्यक्त किये हैं। नायक विनम्र, मधुर, त्यागी, दक्ष, प्रिय बोलने वाला, जनता को प्रसन्न रखने वाला, पवित्र, वाक्पटु, प्रतिष्ठित वंश में उत्पन्न, सुस्थिर मन वाला, युवा अवस्था वाला होता है। बुद्धि, उत्साह, स्मृति, प्रज्ञा, कला तथा मान से युक्त, शूर, दृढ, तेजस्वी, शास्त्रज्ञाता तथा धार्मिक होता है।

''नेता विनीतो मधुरस्त्यागी दक्षः प्रियंवदः।
रक्तलोकः शुचिर्वाग्मी रूढवंशः स्थिरो युवा।।
बुद्ध्युत्साहस्मृतिप्रज्ञाकलामानसमन्वितः।
शूरो दृढश्च तेजस्वी शास्त्रचक्षुश्च धार्मिकः।।'' दशरूपकम् 2.1–2

इन गुणों का प्रयोगपक्ष विभिन्न काव्यों में निबद्ध नायक आदि पात्रों में दिखायी देता है। जैसे राम, कृष्ण, बुद्ध आदि।

नायक के चार प्रकार नाट्यशास्त्र में माने गये हैं। वे हैं– धीरोदात्त, धीरप्रशान्त, धीरललित और धीरोद्धत। अब इन भेदों को प्रस्तुत किया जा रहा है।

10.2.1.1 धीरोदात्त नायक

क्रोध, शोक आदि जिसके अन्तःकरण का विकृत नहीं कर पाते हैं ऐसे महासत्त्व, अत्यन्त गम्भीर, क्षमाशील, अपनी प्रशंसा स्वयं न करने के कारण अविकत्थन, स्थिर स्वभाव वाला, विनय सम्पन्न होने से छिपे हुए अहंकार वाला और जिस कार्य को करने की ठान ले उसे पूरा करने वाला ऐसा दृढव्रत नायक धीरोदात्त नायक कहलाता है। जैसा कि धनंजय कहते हैं–

''महासत्त्वोऽतिगम्भीरः क्षमावानविकत्थनः।
स्थिरो निगूढाहङ्कारो धीरोदात्तो दृढव्रतः।।'' दशरूपकम् 2.4,5

धीरोदात्त नायक का उदाहरण है– राम।

10.2.1.2 धीरप्रशान्त नायक

जो नायक के सामान्य गुणों विनय आदि से युक्त हो तथा ब्राह्मण, वणिक्, मन्त्री का पुत्र इत्यादि हो, वह धीरप्रशान्त नायक कहलाता है। जैसा कि धनंजय कहते हैं–

सामान्यगुणयुक्तस्तु धीरशान्तो द्विजादिकः।'' दशरूपकम् 2.4

धीरप्रशान्त नायक का उदाहरण है– मृच्छकटिकम् प्रकरण का नायक चारुदत्त, मालतीमाधवम् का नायक माधव।

10.2.1.3 धीरललित नायक

धीरललित कोटि का नायक पूरी तरह से निश्चिन्त रहता है। वह कलाओं में आसक्त रहने वाला, सुखी और कोमल स्वभाव वाला होता है। जैसा कि धनंजय कहते हैं–

''निश्चिन्तो धीरललितः कलासक्तः सुखी मृदुः।''

इस नायक के योगक्षेम की सारी व्यवस्था मन्त्रियों के हाथों में होती है। इसी कारण यह निश्चिन्त रहता है। इसमें शृंगार रस की प्रधानता होती है। धीरललित नायक का उदाहरण है– रत्नावली नाटिका का नायक उदयन।

10.2.1.4 धीरोद्धत नायक

इस नायक में घमण्ड और ईर्ष्या पाये जाते हैं। इसके व्यवहार में माया और कपट पाये जाते हैं। यह अहंकारी, चंचल स्वभाव वाला, क्रोधी और अत्मप्रशंसा करने वाला होता है। जैसा कि धनंजय कहते हैं–

''दर्पमात्सर्यभूयिष्ठो मायाच्छद्मपरायणः।
धीरोद्धतस्त्वहङ्कारी चलश्चण्डो विकत्थनः।।'' दशरूपकम् 2.5,6

धीरोद्धत नायक का उदाहरण है वेणीसंहार का नायक भीम।

इस प्रकार आपने नायक के लक्षण तथा उसके भेदों को जान लिया है। अब नायिका के बारे में जानेंगे।

10.2.2 नायिका परिभाषा तथा भेद

नायक में रहने वाले सामान्य गुणों विनय आदि से नायिका भी युक्त होती है अर्थात् नायक के जो विनय आदि सामान्य गुण कहे गये हैं वे नायिका में भी होने चाहिए। नायिका के तीन भेद बताये गये हैं– स्वकीया, अन्या (परकीया) और साधारण स्त्री। जैसा कि धनंजय कहते हैं–

''स्वान्या साधारणस्त्रीति तद्गुणा नायिका त्रिधा।'' दशरूपकम् 2.15

10.2.2.1 स्वकीया नायिका

स्वकीया नायिका का लक्षण करते हुए धनंजय कहते हैं–

''मुग्धा मध्या प्रगल्भेति स्वीयाशीलार्जवादियुक्।'' दशरूपकम् 2.15

अर्थात् स्वकीया नायिका शील सम्पन्न, सरल स्वभाव वाली और लज्जाशील होती है। इसी लक्षण को अधिक स्पष्ट करते हुए धनिक कहते हैं कि वह अच्छे चरित्र वाली, पतिव्रता, कुटिलता से रहित, लज्जाशीला, पति के प्रति व्यवहार में कुशल होती है। स्वकीया नायिका का उदाहरण है उत्तररामचरितम् नाटक की नायिका सीता।

इस स्वकीया नायिका के तीन भेद होते हैं– मुग्धा, मध्या और प्रगल्भा।

10.2.2.2 अन्या (परकीया) नायिका

नायिका का प्रथम भेद बताने के बाद अब दूसरे भेद परकीया नायिका को बतलाते हैं। अन्य स्त्री दो प्रकार की हो सकती है– या तो वह किसी की अविवाहित पुत्री हो या

किसी अन्य की विवाहिता पत्नी हो। नाट्यशास्त्र के नियमानुसार नाटक आदि में अन्य व्यक्ति की विवाहिता पत्नी का मुख्य रस के आलम्बन के रूप में वर्णन कभी नहीं करना चाहिए। अविवाहिता कन्या के प्रति अनुराग का वर्णन ऐच्छिक होता है। वह प्रधान रस का भी अंग बन सकता है और अप्रधान रस का भी। इसका आशय है कि कन्या के प्रति अनुराग का वर्णन नाटक में भी किया जा सकता है। जैसा कि धनंजय कहते हैं–

''अन्यस्त्री कन्यकोढा च नान्योढाऽङ्गिरसे क्वचित्।
कन्यानुरागमिच्छातः कुर्यादङ्गाङ्गिसंश्रयम्।।'' दशरूपकम् 2.20

10.2.2.3 साधारण स्त्री नायिका

यह नायिका का तीसरा प्रकार है। यह कलाओं में पारंगत, स्वभाव से प्रगल्भ, व्यवहार में धूर्त गणिका (वेश्या) होती है। जैसा कि धनंजय ने कहा है–

''साधारणस्त्री गणिका कलाप्रागल्भ्यधौत्ययुक्।'' दशरूपकम् 2.21

साधारण स्त्री नायिका का उदाहरण है मृच्छकटिकम् प्रकरण की नायिका वसन्तसेना।

इन नायिकाओं के भी पुनः कई प्रभेद होते हैं। इस प्रकार नायक– नायिका के बारे में पढ़ने के बाद अब आप अन्य पात्रों के विषय में अध्ययन करेंगे।

10.2.3 सूत्रधार

नाट्य के रंगमंच पर मंचन में सूत्रधार का दायित्त्व महत्त्वपूर्ण होता है इसलिए भरत मुनि उसके बारे में विस्तार से विवेचन करते हैं। सम्पूर्ण मंचन का वह व्यवस्थापक होता है इसलिए उसे नाट्य के मंचन से संबंधित विभिन्न पक्षों की अच्छी समझ होनी चाहिए। वह संभाषण की प्रक्रिया का, ताल–विधान का, स्वरों का, वाद्यों के वादन के सिद्धान्तों का भी ज्ञाता होना चाहिए। वह चारों प्रकार के वाद्यों को बजाने में कुशल होता है। वह अनेक कर्मों का ज्ञाता, नीतिशास्त्र का ज्ञाता, वेशोपचार में निपुण, कामशास्त्र का ज्ञाता, रसों तथा भावों का ज्ञाता, नाट्य प्रयोग करने में पारंगत, कई शिल्पों, कलाओं का ज्ञाता, पदों और छन्दों के विधानों का ज्ञाता, प्रयोग से संबंधित सभी शास्त्रों में कुशल, ग्रह–नक्षत्रों का ज्ञाता, दैहिक गतियों का ज्ञाता, विभिन्न देशों के आचार, व्यवहार, वेशभूषा आदि का ज्ञाता, राजवंशों की जानकारी रखने वाला, शास्त्रों में बताये गये आचारों और कार्यों का श्रवण–बोध पूर्वक व्यवहार कर दूसरों को सिखाने या उपदेश करने में समर्थ होता है। ऐसा वह नाट्यप्रयोग संबंधी विविध शास्त्रों का पारंगत प्रयोक्ता नाट्याचार्य या सूत्रधार कहलाता है। जैसा कि भरत कहते हैं–

''चतुरातोद्यकुशलः नानाकर्मसु शिक्षितः।
ननापाषण्डकार्यज्ञो नीतिशास्त्रार्थतत्त्ववित्।।
वेशोपचारनिपुणः कामशास्त्रविचक्षणः।
नानागतिप्रचारज्ञो रसभावविशारदः।।
नाट्यप्रयोगकुशलो नानाशिल्पसमन्वितः।
पदच्छन्दोविधानज्ञः सर्वशास्त्रविचक्षणः।।
ग्रहनक्षत्रतत्त्वज्ञो देहव्यापारपण्डितः।

पृथिवीद्वीपवर्षाणां पर्वतानां जनस्य च।।
प्रमाणाचरितज्ञश्च राजवंशप्रसूतिवित्।
श्रोता शास्त्रार्थकार्याणां श्रुत्वा चैवावधारकः।।
अवधार्य प्रयोक्ता च शक्तश्चैवोपदेशने।
एवं गुणस्तथाचार्यः सूत्रधारो विधीयते।।'' नाट्यशास्त्र 35.66–71

इनके अतिरिक्त भी कुछ अन्य सहज गुण सूत्रधार में होने चाहिए। वह स्मृति और बुद्धि से युक्त, धीर स्वभाव वाला, उदार प्रकृति वाला, काव्यों को जानने वाला, रोग रहित, मृदु भाषी, प्रिय संभाषण करने वाला, क्रोध न करने वाला, सत्यवादी, कार्य में दक्ष, लोभ रहित होता है।

10.2.4 पारिपार्श्विक

यह मध्यम प्रकृति का पात्र होता है। इसमें सूत्रधार की अपेक्षा गुणों में न्यूनता होती है। यह सूत्रधार का सहायक होता है। इसे पारिपार्श्विक कहा जाता है। भरतमुनि कहते हैं–

''सूत्रधारगुणैश्चैव किंचिदूनैः समन्वितः।
मध्यमप्रकृतिस्तज्ञैर्विज्ञेयः पारिपार्श्विकः।।'' नाट्यशास्त्र 35.74

10.2.5 विदूषक

नाट्य में हास्य रस का वातावरण निर्मित करने वाला पात्र विदूषक कहलाता है। जैसा कि धनंजय ने कहा है–

''हास्यकृद् विदूषकः''

इसकी शारीरिक विशेषताओं का निरूपण भरत मुनि करते हैं। यह ठिगने कद का, लम्बे–लम्बे दाँतों वाला, कूबड़ से युक्त, इधर से उधर बातों को कह देने वाला, बदसूरत, गंजा, भूरी या पीली आँखों वाला होता है। जैसा कि भरत कहते हैं–

''वामनो दन्तुरः कुब्जो द्विजिह्वो विकृताननः।
खलतिः पिङ्गलाक्षश्च स विधेयो विदूषकः।।'' नाट्यशास्त्र 35.79

जैसे अभिज्ञानशाकुन्तलम् में माधव्य विदूषक है।

10.2.6 कंचुकी

कंचुकी को परिभाषित करते हुए भरत मुनि कहते हैं कि जो विद्याओं का ज्ञाता, ईमानदार, काम दोष से रहित, ज्ञान और विज्ञान में कुशल हो, वह कंचुकी कहलाता है। राजा को अपने राजकीय कार्यों के लिए इधर–उधर भेजने में इन कंचुकियों का उपयोग करना चाहिए। इनमें से वर्षवर कोटि का कंचुकी प्रेमसन्देश आदि को ले जाने का कार्य करता है। औपस्थानिक और निर्मुण्ड की नियुक्ति स्त्रियों के प्रेषण कार्य के लिए होती है। इसी तरह राजकुमारियों तथा बालिकाओं के संरक्षण का कार्य भी ये किया करते हैं। राजाओं के अन्तःपुर वर्णन में कंचुकी प्रायः मंच पर दृष्टिगोचर होता है। द्रष्टव्य–

''ये विद्यासत्यसम्पन्नाः कामदोषविवर्जिताः।

ज्ञानविज्ञानकुशलाः कंचुकीयास्तु ते स्मृताः।।
प्रेषणे चार्थसंयुक्ते कंचुकीयान्नियोजयेत्।
तथा वर्षवराश्चैव कामचारेषु योजयेत्।।
औपस्थयिकनिर्मुण्डान् स्त्रीणां प्रेषणकर्मणि।
रक्षणे च कुमारीणां बालिकानां च योजयेत्।।'' नाट्यशास्त्र 34.75–77

जैसे उत्तररामचरितम् में गृष्टि कंचुकी है।

10.2.7 प्रतिनायक

कथा के नायक का शत्रु प्रतिनायक होता है। वह नायक की फलप्राप्ति में विघ्न उपस्थित कर देता है। इसे खलनायक भी कह सकते हैं। यह लोभी, धीरोद्धत, पाप कर्म करने वाला तथा व्यसनी होता है। जैसा कि धनंजय ने कहा है–

''लुब्धो धीरोद्धतः स्तब्धः पापकृद् व्यसनी रिपुः'' दशरूपकम् 2.9

जैसे राम का प्रतिनायक रावण तथा कृष्ण का प्रतिनायक शिशुपाल है।

10.3 सारांश

नायक भारतीय परम्परा में प्रचलित प्रायः सभी सद्गुणों से युक्त होता है। वह प्रकृति के आधार पर चार प्रकार का माना गया है– धीरोदात्त, धीरप्रशान्त, धीरललित और धीरोद्धत। रूपक के प्रकारों में से नाटक में नायक धीरोदात्त कोटि का ही होता है। नायक के ही सामान्य गुणों से युक्त नायिका भी होती है। वह तीन प्रकार की मानी गयी है– स्वकीया, परकीया और साधारण स्त्री। इनके अतिरिक्त अन्य पात्र भी कथावस्तु को आगे बढ़ाने में सहायक होते हैं। सूत्रधार पूरे रंगमंच का संचालक और व्यवस्थापक होता है इसलिए भरतमुनि ने सूत्रधार के विषय में विस्तार से विवेचन किया है। सूत्रधार का सहायक पात्र पारिपार्श्विक होता है। नाट्य में हास्य का संचार करने वाला पात्र विदूषक होता है। राजा के अन्तःपुर में रहकर विभिन्न कार्यों को करने वाला पात्र कंचुकी होता है। इनके अतिरिक्त नायक का शत्रु और विरोधी पात्र प्रतिनायक या खलनायक होता है। इस प्रकार आपने नाट्य में होने वाले प्रमुख पात्रों के बारे में जाना। साथ ही नायक और नायिका के भेदों से भी आपका परिचय हुआ। इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् आप नाट्य के प्रमुख पात्रों को परिभाषित कर सकेंगे जिनमें नायक और प्रतिनायक भी सम्मिलित हैं।

10.4 शब्दावली

नाट्य – चार प्रकार के अभिनय द्वारा प्राचीन राम आदि की अवस्थाओं का अनुकरण।

नायक – कथावस्तु को बढ़ाने वाला प्रमुख पात्र, फलप्राप्ति का अधिकारी।

धीर – धैर्ययुक्त।

सूत्रधार – रंगमंच का संचालक और व्यवस्थापक।

पारिपार्श्विक – नाटक के आरम्भ में मंच पर सूत्रधार का सहायक पात्र।

विदूषक – हास्य का संचार करने वाला पात्र।

कंचुकी – राजा के अन्तःपुर में कार्यरत पात्र।

प्रतिनायक – नायक का विरोधी, शत्रु।

स्वकीया – नायक की पत्नी, शील आदि गुण युक्त।

अन्या नायिका – अविवाहित कन्या, अन्य की परिणीता स्त्री नायिका

साधारण स्त्री – गणिका नायिका

10.5 सन्दर्भ ग्रन्थ

1. नाट्यशास्त्र, भरतमुनि, बाबूलाल शुक्ल शास्त्री, चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, पुनर्मुद्रण 2017 ई.।
2. दशरूपक, धनंजय, डॉ. भोलाशंकर व्यास, चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी, पुनर्मुद्रित सं. 2000 ई.।

10.6 बोध प्रश्न

1. नायक किसे कहते हैं?
2. धीरोदात्त नायक को उदाहरण सहित समझाइए।
3. धीरप्रशान्त नायक को उदाहरण सहित समझाइए।
4. धीरललित नायक को उदाहरण सहित समझाइए।
5. धीरोद्धत नायक को उदाहरण सहित समझाइए।
6. नायिका किसे कहते हैं?
7. नायिका के भेदों को समझाइए।
8. सूत्रधार की विशेषताएँ लिखिए।
9. पारिपार्श्विक से आप क्या समझते हैं?
10. विदूषक को उदाहरण सहित समझाइए।
11. कंचुकी पर टिप्पणी लिखिए।
12. प्रतिनायक का उदाहरण सहित विवेचन कीजिए।